Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ प्रदोष व्रत के नियम ॥

॥ ॐ नमः शिवाय ॥

Full Disclaimer

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji
"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS AT YOUR DOOR"

॥ तिथि, उपवास और आचरण ॥

सही दिन और समय

कृष्ण और शुक्ल पक्ष की त्रयोदशी पर प्रदोष होता है, पर व्रत का दिन उस संध्या के अनुसार तय होता है जिसमें त्रयोदशी रहती है। स्थानीय सूर्यास्त और तिथि देखें; अलग शहरों की सूची में अंतर संभव है।

व्रत का संकल्प

सुबह शिव-पार्वती का स्मरण कर व्रत का संकल्प लें। कुछ लोग फलाहार, कुछ एक समय सात्त्विक भोजन और कुछ केवल पूजा करते हैं। निर्जल रहना सभी के लिए अनिवार्य नियम नहीं है।

संध्या पूजन

मुख्य पूजा प्रदोष काल में करें। स्वच्छ जल, बेलपत्र, पुष्प, दीप और मंत्रजप के साथ शिव आराधना करें। कथा और आरती के बाद प्रसाद बाँटें। अपनी घरेलू परंपरा के अनुसार पूजा के बाद व्रत खोलें।

दैनिक व्यवहार

दिन भर स्वच्छता, संयम और सौम्य वाणी का ध्यान रखें। झूठ, क्रोध और अनावश्यक विवाद से बचने का प्रयास करें। परिवार के किसी व्यक्ति पर कठिन उपवास का दबाव न डालें।

॥ भोजन और स्वास्थ्य संबंधी सावधानी ॥

पारण की घरेलू रीति

कई परिवार प्रदोष काल की पूजा के बाद फल या हल्का सात्त्विक भोजन लेकर व्रत खोलते हैं। कहीं अगले दिन की अलग रीति भी मिलती है। अपने घर के नियम और स्वास्थ्य के अनुसार समय तय करें।

स्वास्थ्य पहले

गर्भावस्था, मधुमेह, बीमारी, बुज़ुर्ग अवस्था या नियमित दवाओं की स्थिति में लंबे समय तक भोजन-पानी रोकना हानिकारक हो सकता है। चिकित्सकीय सलाह, आवश्यक आहार और दवाएँ जारी रखें।

वार विशेष की परंपरा

सोम, भौम, शनि और दूसरे वारों के प्रदोष में कथाएँ या कुछ घरेलू नियम बदल सकते हैं। किसी एक वार की कथा या भोजन-विधि को सभी प्रदोषों के लिए अनिवार्य न मानें।

व्रत करना संभव न हो तो संध्या में शिवजी का नाम-जप और प्रार्थना की जा सकती है। धार्मिक फल आस्था का विषय है; बीमारी में समय पर उपचार लें।

॥ हर हर महादेव ॥